SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत् शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

रविन्द्रनाथ यादव, पी–एचडी, बी.एड. विभाग
रामेश्वरम इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग सीतापुर रोड, लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत
नितिन बाजपेयी, पी–एचडी, बी.एड. विभाग
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
रविन्द्रनाथ यादव, पी–एचडी
नितिन बाजपेयी, पी–एचडी
E-mail : nitin.bajpaiknp@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/11/2025
Revised on : 02/01/2026
Accepted on : 12/01/2026
Overall Similarity : 02% on 03/01/2026

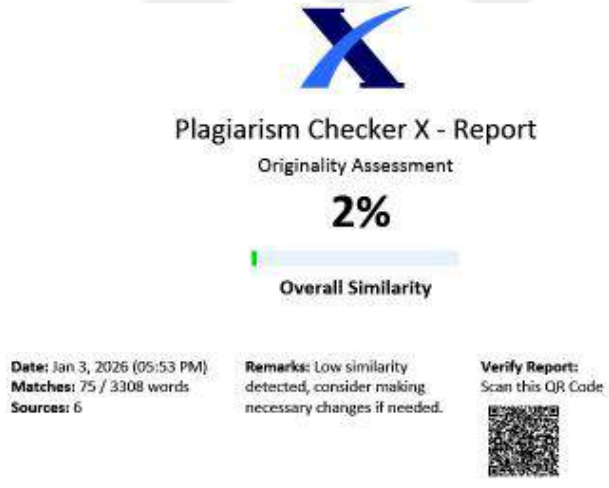

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से लखनऊ जिले के ग्रामीण विद्यालय के 200 शिक्षकों तथा शहरी विद्यालयों के 200 शिक्षकों पर डॉ. एस. पी. आहुलवालिया द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शिक्षक अभिवृत्ति मापनी को प्रशासित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक एवं अनुमानात्मक सांख्यिकी विधि का प्रयोग कर परिणाम प्राप्त किये गये है। प्राप्त परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर है। ग्रामीण विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति उच्च पायी गयी। परिणामों से यह भी पता चला कि शिक्षक अभिवृत्ति के आयामों – शिक्षण पेशा, कक्षा शिक्षण छात्र एवं शिक्षक के प्रति अभिवृत्ति के आयामों– शिक्षण पेशा, कक्षा शिक्षण, छात्र एवं शिक्षक के प्रति अभिवृत्ति में शहरी विद्यालय के शिक्षक ग्रामीण विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में उच्च अभिवृत्ति रखते है जबकि शिक्षक अभिवृत्ति के आयाम – बाल केन्द्रित अभ्यास में शहरी विद्यालय के शिक्षक, ग्रामीण विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में निम्न अभिवृत्ति रखते है तथा शिक्षक अभिवृत्ति के आयाम–शैक्षिक प्रयास में ग्रामीण व शहरी विद्यालय के शिक्षकों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् वे समान अभिवृत्ति रखते है।

मुख्य शब्द

माध्यमिक शिक्षा, ग्रामीण विद्यालय, शहरी विद्यालय, माध्यमिक शिक्षक, शिक्षक अभिवृत्ति.

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति विकास और स्थिरता का आधार स्तंभ होती है। शिक्षा की गुणवत्ता का निर्धारण केवल पाठ्यक्रम, संसाधन या नीतियों पर ही निर्भर नहीं करती बल्कि मुख्य रूप से शिक्षकों की विचारधारा, कार्यशैली तथा शिक्षक की अभिवृत्ति पर निर्भर करता है। शिक्षक शिक्षण–प्रक्रिया का प्रमुख केन्द्र होता है जो विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान प्रदान करता है बल्कि उनके व्यक्तित्व विकास, व्यवहार, मूल्य एवं जीवन दृष्टिकोण को भी आकार देता है इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक अभिवृत्ति को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। शिक्षक की सकारात्मक अथवा नकारात्मक अभिवृत्ति सम्पूर्ण शिक्षण–प्रक्रिया को प्रभावित करती है। सकारात्मक अभिवृत्ति वाले शिक्षक शिक्षण के प्रति अधिक समर्पित, प्रेरित और प्रभावी माने जाते है।

भारत में शिक्षा व्यवस्था विविध परिस्थितियों से घिरी हुई है, जिनमें विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों के बीच की असमानता उल्लेखनीय है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रायः अपर्याप्त शैक्षिक संसाधन, सीमित तकनीकी सुविधाएँ कम शिक्षण–सामग्री, परिवहन की समस्यायें सामाजिक–आर्थिक बाधाएँ तथा प्रशासनिक चुनौतियाँ पाई जाती है दूसरी ओर, शहरी विद्यालय अपेक्षाकृत बेहतर अधोसंरचना, आधुनिक तकनीक, शिक्षण सहायक उपकरण, अनुकूल वातावरण और बहुआयामी अवसर प्रदान करते है। इन परिस्थितियों का प्रत्यक्ष प्रभाव वहाँ कार्यरत शिक्षकों की प्रेरणा, संतुष्टि, दायित्व–निर्वहन और शिक्षण के प्रति उनकी अभिवृत्ति पर पड़ना स्वाभाविक है।

शिक्षक की अभिवृत्ति केवल उनकी व्यक्तिगत सोच का परिणाम नहीं होती बल्कि यह उनके कार्य–परिवेश, प्रशासनिक सहयोग, विद्यार्थियों के व्यवहार, सामाजिक मान्यता, प्रशिक्षण अवसरों तथा वेतन सुविधाओं जैसे अनेक बाह्य और आंतरिक कारकों से प्रभावित होती है। अतः ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों के बीच इन कारकों की भिन्नता उनके शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण में भी उल्लेखनीय अंतर उत्पन्न कर सकती है। इस अंतर को वैज्ञानिक और व्यवस्थित रूप सें समझना आज की शिक्षा व्यवस्था के विकास लिए अत्यंत आवश्यक है।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP–2020) शिक्षक को शिक्षा–सुधार का मुख्य आधार मानती है, और शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता एवं सकारात्मक अभिवृत्ति को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल देती है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन न केवल शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि यह शिक्षा–योजना निर्माण, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विकास संसाधनों के समान वितरण तथा गुणवत्ता–आधारित सुधार के लिए भी दिशा प्रदान करता है।

इन्ही बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से यह जानना है कि दोनों परिवेशों में कार्यरत शिक्षकों में किस प्रकार की समानताएँ एवं असमानताएँ पाई जाती है, तथा किन कारकों का उनके शिक्षण व्यवहार पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है यह अध्ययन शिक्षा व्यवस्था में व्यावहारिक सुधार तथा नीति निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है।

समस्या कथनः ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध समस्या में प्रयुक्त चरों की संक्रियात्मक परिभाषा

शोध समस्या में ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्यन किया गया है अतः इसमें निम्नलिखित चर प्रयुक्त किये गये है:

स्वतंत्र चरः विद्यालय प्रकार – ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय एवं शहरी माध्यमिक विद्यालय।

स्वतंत्र चर वह होता है जिसका प्रभाव अन्य चर पर देखा जाता है अथवा जिसके आधार पर अन्य चर में अन्तर देखा जाता है। इस शोध में माध्यमिक विद्यालय का प्रकार – ग्रामीण अथवा शहरी स्वतंत्र चर है, क्योंकि यह शिक्षकों की अभिवृत्ति में अन्तर करने वाला प्रमुख कारक माना गया है।

आश्रित चरः शिक्षकों की अभिवृत्ति

आश्रित चर वह होता है जो स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण परिवर्तित होता है। इस अध्ययन में शिक्षकों की अभिवृत्ति को आश्रित चर के रूप में लिया गया है जिसे मानकीकृत शिक्षक अभिवृत्ति के माध्यम से मापा गया है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालय का क्षेत्र (ग्रामीण–शहरी) स्वतंत्र चर, जबकि शिक्षकों की अभिवृत्ति आश्रित चर के रूप में प्रयुक्त की गई है। अन्य व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक चरों को नियंत्रित रखकर शिक्षकों की अभिवृत्ति में पाये जाने वाले अन्तर का निष्पक्ष एवं वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। समस्या में प्रयुक्त चरों का संक्रियात्मक अर्थ इस प्रकार है:

माध्यमिक शिक्षकः प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक से आशय उन व्यक्तियों से है जो ग्रामीण अथवा शहरी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर नियमित रूप से अध्यापन कार्य कर रहे है तथा जिनकी नियुक्ति विद्यालय प्रबंधन अथवा शासन द्वारा मान्यता प्राप्त है।

ग्रामीण विद्यालयः प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण विद्यालय से अभिप्राय उन विद्यालयों से है जो सरकारी अभिलेखों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है और जिनका संचालन ग्रामीण प्रशासनिक सीमा के अर्न्तगत किया जाता है।

शहरी विद्यालयः प्रस्तुत अध्ययन में शहरी विद्यालय से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जो नगर पालिका/नगर निगम क्षेत्र में स्थित है तथा शहरी प्रशासनिक सीमा के अन्तर्गत संचालित होते है।

शिक्षक अभिवृत्तिः प्रस्तुत अध्ययन में अभिवृत्ति से आशय शिक्षक की वह मानसिक एवं भावनात्मक प्रवृत्ति है जो उसके शिक्षण व्यवसाय, कक्षा–कक्ष शिक्षण, बालकेन्द्रित अभ्यास, शैक्षिक प्रक्रिया, विद्यार्थी तथा शिक्षक के प्रति उसके विचारों, भावनाओं एवं व्यवहार में परिलक्षित होती है। इस शोध में डॉ. एस. पी. आहुलवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति सूची द्वारा प्राप्त कुल अंको के आधार पर मापा गया है। इस सूची से शिक्षक द्वारा दिये गये उत्तरों के अनुसार प्राप्त स्कोर को उसकी अभिवृत्ति का मापक माना गया है। अधिक अंक सकारात्मक अभिवृत्ति तथा कम अंक नकारात्मक अभिवृत्ति को प्रदर्शित करते है।

तुलनात्मक अध्ययनः प्रस्तुत अध्ययन में तुलनात्मक अध्ययन से तात्पर्य ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति के औसत अंको की तुलना करना है जिसके लिए उपयुक्त सांख्यिकी तकनीकों का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में सभी प्रमुख चरों को स्पष्ट एवं मापनीय रूप से परिभाषित किया गया है, जिससे शोध की प्रक्रिया, परिणाम एवं निष्कर्ष वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ट तथा विश्वनीय बन सके।

सम्बंधित साहित्य की समीक्षा

भटनागर और शर्मा (2001) ने शिक्षक अभिवृत्ति एवं कार्य–संतोष के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि जिन शिक्षकों का कार्य–संतोष स्तर उच्च होता है, उनकी अभिवृत्ति भी अधिक सकारात्मक होती है।

कुलश्रेष्ठ (2008) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि कक्षाकक्ष शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षक विद्यार्थियों की सहभागिता को अधिक महत्व देते हैं तथा नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियों को अपनाते हैं।

मित्तल (2008) ने माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक प्रक्रिया के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करते हुए पाया कि सकारात्मक अभिवृत्ति शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को संगठित एवं उद्देश्यपूर्ण बनाती है।

सिंह और वर्मा (2014) ने ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति कुछ आयामों में अधिक सकारात्मक थी, जबकि ग्रामीण शिक्षकों में विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अधिक पाया गया।

कुमार (2018) ने उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक अभिवृत्ति का अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि विद्यालयीय वातावरण एवं प्रशासनिक सहयोग शिक्षक अभिवृत्ति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

सरकार एवं विश्वास (2024) द्वारा किए गए अध्ययन में माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पेशेवर अभिवृत्ति एवं विद्यालयीय समायोजन के मध्य संबंध का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि शिक्षक अभिवृत्ति और विद्यालयीय समायोजन के बीच सकारात्मक सहसंबंध विद्यमान है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षक विद्यालयीय वातावरण में बेहतर समायोजन स्थापित कर पाते हैं।

पुष्पा एवं पवन कुमार (2025) ने राजस्थान के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर तुलनात्मक अध्ययन किया। यह शोध दर्शाता है कि शहरी तथा ग्रामीण शिक्षकों के दृष्टिकोण में संसाधनों, प्रशिक्षण तथा समुदाय समर्थन की भिन्नताओं के कारण स्पष्ट अंतर होता है, जिससे समावेशी अभ्यास के प्रभावी कार्यान्वयन में भिन्नता आती है। अतः ग्रामीण शिक्षकों की तैयारियों में वृद्धि के लिए लक्षित व्यावसायिक विकास आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य

ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन ।

अध्ययन की शून्य परिकल्पना

ग्रामीण तथा शहरी विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

अध्ययन की सीमाएँ

1. प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले को शामिल किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन केवल चयनित ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल माध्यमिक शिक्षकों पर केन्द्रित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में केवल शिक्षक अभिवृत्ति सूची के माध्यम से प्राप्त आँकड़ों का उपयोग किया गया है।
5. प्रस्तुत अध्ययन विशेषतः शिक्षक अभिवृत्ति तक सीमित है, अन्य मनोवैज्ञानिक पहलुओं को शामिल नहीं किया गया है।

शोध पद्धति

शोध विधिः प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध का प्रकारः प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक प्रकार का है।

शोध क्षेत्रः प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का तक सीमित है।

शोध की जनसंख्याः प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले के ग्रामीण और शहरी माध्यमिक

विद्यालय के सभी शिक्षक शामिल है।

न्यादर्श: प्रस्तुत शोध के अर्न्तगत शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय की सूची से 27 शहरी माध्यमिक विद्यालयों तथा 41 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों से कुल 400 माध्यमिक शिक्षकों का सरल यादृच्छिकृत विधि से निम्न प्रकार चयनित किया गया:

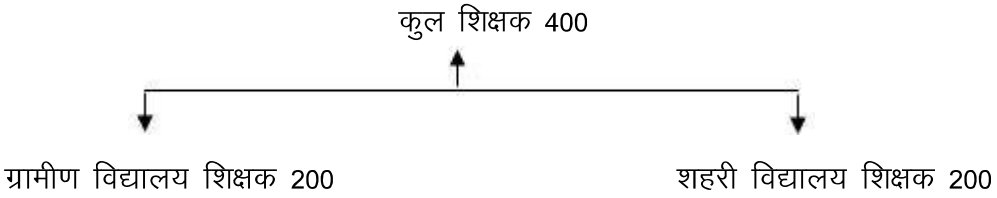

स्वतंत्र न्यादर्श: विद्यालय के प्रकार (ग्रामीण व शहरी)

आश्रित न्यादर्श: शिक्षक अभिवृत्ति

नियंत्रित चर: शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता
विद्यालय का स्तर
विषय विशेषज्ञता
लिंग
शिक्षक अनुभव

शोध उपकरण: प्रस्तुत शोध में डॉ. एस.पी. आहुलवालिया द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शिक्षक अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया यह सूची 90 पदों वाले एक लिकर्ट उपकरण हैं जिसमें 6 उप पैमाने शामिल है प्रत्येक पैमाने में 15 कथन है जो भावी और कार्यरत शिक्षकों के व्यावसायिक दृष्टिकोण के एक विशेष पहलू से सम्बन्धित है सूची में अभिवृत्ति में निम्न 6 पहलू शामिल है:

1. शिक्षण व्यवसाय
2. कक्षा–कक्ष शिक्षण
3. बालकेन्द्रित अभ्यास
4. शैक्षिक प्रक्रिया
5. विद्यार्थी
6. शिक्षक

आंकड़ा संग्रहण

1. जिला विद्यालय निरीक्षक लखनऊ के कार्यालय से लखनऊ जिले के माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गयी।
2. प्राप्त सूची से ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों की सूची तैयार की गयी तत्पश्चात् यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुये अध्ययन हेतु ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों का चयन किया गया।
3. चयनित विद्यालयों के प्रधानाचार्य से अनुमति प्राप्त कर शिक्षकों को शिक्षण अभिवृत्ति मापनी दी गयी।
4. सभी पदो को भरवाकर स्कोरिंग की गई।
5. स्कोर के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी शिक्षको की अभिवृत्ति का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ: शोध में आँकड़ो के विश्लेषण करने हेतु निम्न साख्यिकीय प्रविधियाँ प्रयुक्त की गयी है:

1. मध्यमान 2. प्रमाणिक विचलन 3. टी परीक्षण

आंकड़ों का विश्लेषण

ग्रामीण तथा शहरी विद्यालय के शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं की शिक्षक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से 200 शिक्षकों एवं 200 शिक्षिकाओं पर डॉ. एस.पी. आहुलवालिया द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शिक्षक अभिवृत्ति सूची को प्रशासित किया गया। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर मध्यमान (Mean) प्रामाणिक विचलन (Standard Deviation) तथा सार्थक अंतर करने से t परीक्षण की गणना की गई प्राप्त परिणाम तालिका 1 में इस प्रकार प्राप्त हुये।

तालिका 1: शिक्षक व शिक्षिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्त परिणामों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा टी मान

शिक्षा अभिवृत्ति के क्षेत्र	विद्यालय प्रकार				
	ग्रामीण विद्यालय शिक्षिका N = 200		शहरी विद्यालय शिक्षक N = 200		t मान
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
(a) शिक्षण पेशा Teaching Profession	27.17	7.20	28.74	5.71	2.41
(b) कक्षा शिक्षण Classroom Teaching)	30.02	4.93	30.97	3.78	2.16
(c) बाल केन्द्रित अभ्यास Child Centered Prtactices)	35.21	5.96	33.43	8.78	2.37
(d) शैक्षिक प्रयास Educational Process	27.83	4.79	27.27	4.10	1.26
(e) छात्र Pupils	24.22	5.52	25.38	4.30	2.35
(f) शिक्षक Teacher	25.62	5.93	27.04	5.59	2.47
योग Total	170.08	7.59	172.84	13.54	2.51

df = 398
.05 = 1.96
.01 = 2.59

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको की शिक्षक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 170.08 तथा शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको की शिक्षक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 172.84 प्राप्त हुआ जिससे स्पष्ट होता है कि शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको की शिक्षक अभिवृत्ति, ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको की अभिवृत्ति से अधिक है अर्थात् शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अधिक शिक्षक अभिवृत्ति रखते है। इसी प्रकार शिक्षक अभिवृत्ति के आयामों– शिक्षण पेशा में ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 27.17 तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 28.74, कक्षा शिक्षण में ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 30.02 तथा शहरी विद्यालयो के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 30.97,बालकेन्द्रित अभ्यास में ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 35.21 तथा शहरी विद्यालयो के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 33.43,शैक्षिक प्रयास में ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 27.83 तथा शहरी विद्यालयो के शिक्षकों के प्राप्तांकों का मध्यमान 27.27 छात्र के प्रति अभिवृत्ति में ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 24.22 तथा शहरी माध्यमिक विध्यालओ के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 25.38 और शिक्षक के प्रति अभिवृत्ति में ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयके शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 25.62 तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों

के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 27.04 प्राप्त हुआ है। इस प्रकार शिक्षक अभिवृत्ति के आयामों– शिक्षण पेशा, कक्षा शिक्षण, छात्र और शिक्षक के प्रति अभिवृत्ति में शहरी माध्यमिक विद्यालयके शिक्षक, ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको की तुलना मे अधिक अभिवृत्ति रखते है जबकि बालकेन्द्रित अभ्यास और शैक्षिक प्रयास में ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयके शिक्षक शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों से अधिक शिक्षक अभिवृत्ति रखते है इस प्रकार के परिणाम बार चित्र सं. 1 मे दर्शाये गये है।

चित्र सं. 1: ग्रामीण तथा शहरी विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमानों का बार चित्र

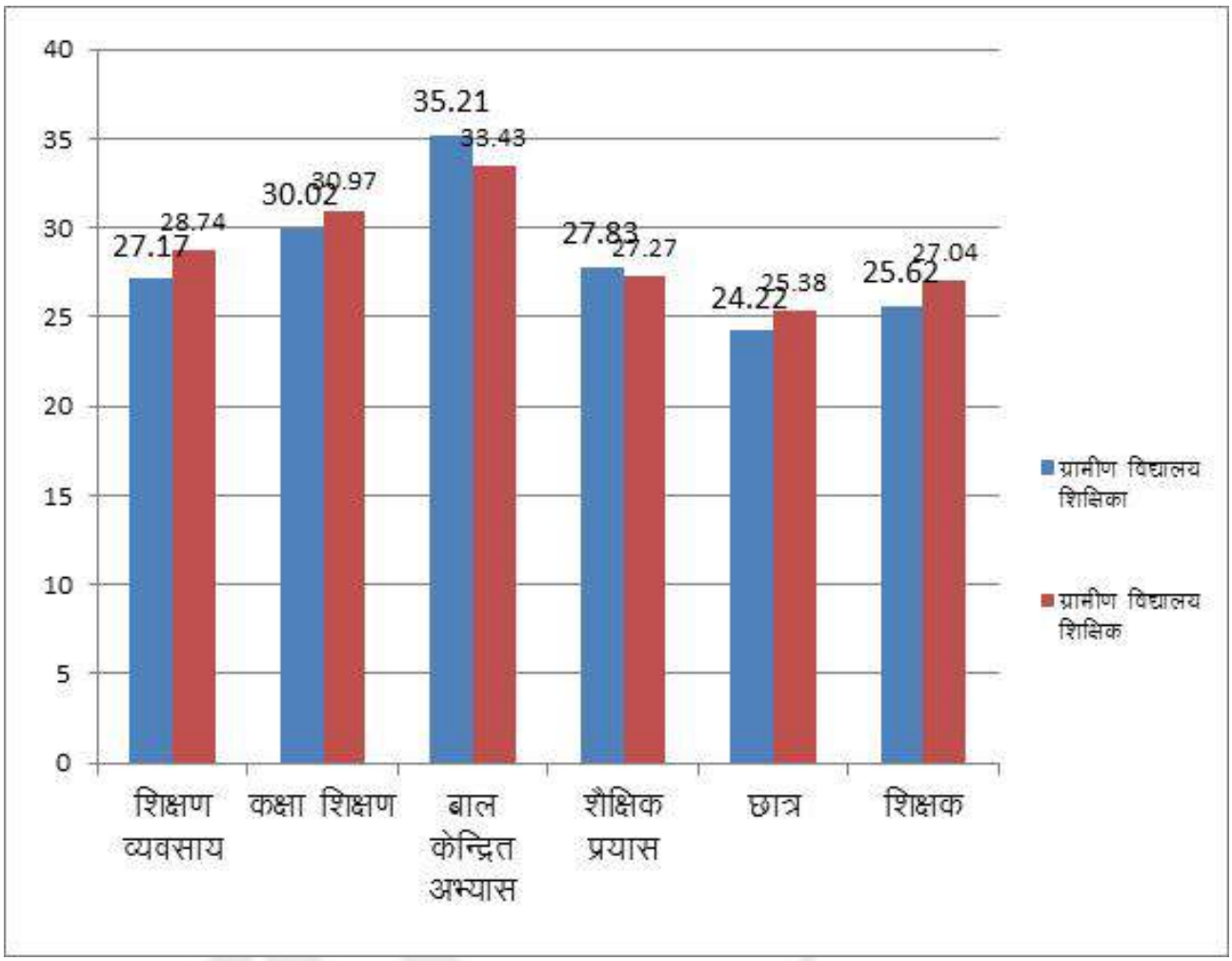

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति (मध्यमान 172.84) ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति (मध्यमान 170.08) की तुलना में उच्च है ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों व शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से ज मूल्य की गणना की गयी। तालिका 4.07 के निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि t मान 2.51 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश 398 के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार जब ग्रामीण और शहरी विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण अभिवृत्ति के विभिन्न क्षेत्रों – शिक्षण पेशा (t मान 2.41) कक्षा शिक्षण (t मान 2.16) बाल केन्द्रित अभ्यास (t मान 2.37) छात्र (t मान 2.35) तथा शिक्षक (t मान 2.47) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है। शिक्षण अभिवृत्ति के क्षेत्र शैक्षिक प्रयास में शहरी विद्यालय और ग्रामीण विद्यालय के शिक्षकों के मध्य t मान 1.26 प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर पर कोई सार्थक अन्तर को प्रदर्शित नहीं करता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना (H_{01}) ग्रामीण तथा शहरी विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा–असत्य सिद्ध होती है, अतः ग्रामीण और शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की

अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर है। ग्रामीण विद्यालय की तुलना में शहरी विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति उच्च पायी गयी। शिक्षण पेशा, कक्षा शिक्षण छात्र एवं शिक्षक के प्रति अभिवृत्ति में शहरी विद्यालय के शिक्षक ग्रामीण विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में उच्च अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि बाल केन्द्रित अभ्यास में शहरी विद्यालय के शिक्षक, ग्रामीण विद्यालय के शिक्षक की तुलना में निम्न अभिवृत्ति रखते हैं तथा शैक्षिक प्रयास में से ग्रामीण व शहरी विद्यालय के शिक्षक समान अभिवृत्ति रखते हैं।

परिणामों के शैक्षिक अनुप्रयोग

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है। यह अंतर विद्यालयीय परिवेश, संसाधनों की उपलब्धता तथा शैक्षिक संस्कृति के प्रभाव को प्रतिपादित करता है। अतः शैक्षिक नियोजन में इन कारकों को विशेष रूप से ध्यान में रखा जाना चाहिए। अध्ययन में शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की समग्र शिक्षक अभिवृत्ति ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में अधिक सकारात्मक पाई गई है। इस आधार पर ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षक अभिवृत्ति संवर्धन हेतु व्यावसायिक विकास कार्यक्रम, प्रेरणात्मक कार्यशालाएँ एवं सतत् प्रशिक्षण की आवश्यकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। शिक्षण पेशा, कक्षा शिक्षण तथा छात्र व शिक्षक आयामों में शहरी शिक्षकों की उच्च अभिवृत्ति यह संकेत देती है कि उनके प्रभावी शिक्षण व्यवहारों एवं पेशेवर अनुभवों को श्रेष्ठ अभ्यासों के रूप में ग्रामीण विद्यालयों तक प्रसारित किया जाना चाहिए। इसके विपरीत, बाल–केन्द्रित अभ्यास के क्षेत्र में ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षाकृत उच्च अभिवृत्ति यह दर्शाती है कि शहरी विद्यालयों में शिक्षार्थी–केन्द्रित, गतिविधि आधारित एवं अनुभवात्मक अधिगम को अधिक प्रभावी रूप से लागू किए जाने की आवश्यकता है। शैक्षिक प्रयास के आयाम में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की समान अभिवृत्ति एक सकारात्मक संकेत है, जिसे बनाए रखने हेतु दोनों परिवेशों में शैक्षिक संसाधनों, नवाचारों एवं प्रोत्साहन योजनाओं की समान उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

अतः यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा, विद्यालयीय सुधार तथा शैक्षिक नीति निर्माण के क्षेत्र में उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत करता है और शिक्षकों की अभिवृत्ति के संतुलित विकास हेतु व्यावहारिक दिशानिर्देश प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. Bhatnagar, R. & Sharma, S. (2001) Teacher attitude and job satisfaction. *Indian Journal of Educational Psychology,* 6(1), 23–31.
2. Garrett, H. E. (2008) *Statistics in Psychology and Eduction.* Paragon International Publishers, New Delhi.
3. Guilford ,J.P. & Fruchter, B. (1978) *Fundamental Statistics in Pschology and education,* (6th ed.), McGraw-Hill, New York.
4. Koul, L. (2013) *Methodology of educational research* (4th ed.),Vikas Publishing House, New Delhi.
5. Kulshreshtha, S. P. (2008) Classroom teaching and teacher attitude. *Journal of Educational Studies,* 4(1), 33–40.
6. Kumar, R. (2018) A study of teacher attitude in secondary schools of Uttar Pradesh. *International Journal of Research in Education,* 7(2), 89–96.
7. Mittal, A. (2010) Teacher attitude towards educational process at secondary level. *Educational Horizons,* 5(2), 61–68.
8. Pushpa & Kumar, P. (2025) A comparative study of urban and rural teacher's attitude towards inclusive education in rajasthan. *Shodhshauryam international scientific refereed research journal,* 8(2)78-88.

9. Sarkar, S. & Biswas, P. (2024) Secondary school teachers' attitude towards the teaching profession in relation to their adjustment in schools. *International Journal of Literacy and Education,* 4(2), 186–192. https://doi.org/10.22271/27891607.2024

10. Singh, R. &Verma, P. (2014) A comprative study of attitude of teachers of rural and urban secondary schools. *International journal of education and psychological research,* 3(2)45-52.

11. Yadav, R.N. (2024) A study of the impact of mental health on teaching attitude , job satisfaction and teaching competency of teachers working in rural and urban secondary schools (doctoral dissertation) Veer Bahadur Singh Purvancal University, Jaunur, India.

****